اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿٥٤﴾ وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾ وَمَا

तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं[58] और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है और

خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ

मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही (इसी) लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें[59] मैं उन से कुछ रिज़्क़ नहीं मांगता[60]

وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ﴿٥٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ﴿٥٨﴾

और न येह चाहता हूं कि वोह मुझे खाना दें[61] बेशक अल्लाह ही बड़ा रिज़्क़ देने वाला क़ुव्वत वाला क़ुदरत वाला है[62]

فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٥٩﴾

तो बेशक उन ज़ालिमों के लिये[63] अ़ज़ाब की एक बारी है[64] जैसे उन के साथ वालों के लिये एक बारी थी[65] तो मुझ से जल्दी न करें[66]

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ يَّوْمِهِمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع ٢ ١٤ ٢

तो काफ़िरों की ख़राबी है उन के उस दिन से जिस का वा'दा दिये जाते हैं[67]

اٰیاتها ٤٩ | ٥٢ سُوْرَةُ الطُّوْرِ مَكِّيَّةٌ ٧٦ | رکوعاتها ٢

सूरए तूर मक्किय्या है, इस में उन्चास आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَالطُّوْرِ ﴿١﴾ وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ﴿٢﴾ فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ﴿٣﴾ وَّالْبَيْتِ

तूर की क़सम[2] और उस नविश्ते की[3] जो खुले दफ़्तर में लिखा है और बैते

58 : क्यूं कि आप रिसालत की तब्लीग़ फ़रमा चुके और दा'वत व इर्शाद में जह्दे बलीग़ सर्फ़ कर चुके और आप ने अपनी सई में कोई दक़ीक़ा उठा नहीं रखा। **शाने नुज़ूल :** जब येह आयत नाज़िल हुई तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ग़मगीन हुए और आप के अस्हाब को बहुत रन्ज हुवा कि जब रसूल عَلَيْهِ السَّلَام को ए'राज़ करने का हुक्म हो गया तो अब वह्य क्यूं आएगी और जब नबी ने उम्मत को तब्लीग़ ब त़रीक़े अतम फ़रमा दी और उम्मत सरकशी से बाज़ न आई और रसूल को उन से ए'राज़ का हुक्म मिल गया तो वक़्त आ गया कि उन पर अ़ज़ाब नाज़िल हो, इस पर वोह आयते करीमा नाज़िल हुई जो इस आयत के बा'द है और इस में तस्कीन दी गई कि सिल्सिलए वह्य मुन्तक़त़अ़ नहीं हुवा है, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नसीह़त सआ़दत मन्दों के लिये जारी रहेगी, चुनान्चे इर्शाद हुवा **59 :** और मेरी मा'रिफ़त हो। **60 :** कि मेरे बन्दों को रोज़ी दें या सब की नहीं तो अपनी ही रोज़ी ख़ुद पैदा करें क्यूं कि रज़्ज़ाक़ मैं हूं और सब की रोज़ी का मैं ही कफ़ील हूं। **61 :** मेरी ख़ल्क़ के लिये। **62 :** सब को वोही देता वोही पालता है। **63 :** जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब कर के अपनी जानों पर ज़ुल्म किया **64 :** हिस्सा है नसीब है **65 :** या'नी उममे साबिक़ा (गुज़श्ता उम्मतों) के कुफ़्फ़ार के लिये जो अम्बिया की तक्ज़ीब में उन के साथी थे उन का अ़ज़ाब व हलाक में हिस्सा था **66 :** अ़ज़ाब नाज़िल करने की। **67 :** और वोह रोज़े क़ियामत है। **1 :** सूरए तूर मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, उन्चास 49 आयतें, तीन सो बारह 312 कलिमे, एक हज़ार पांच सो 1500 हर्फ़ हैं। **2 :** या'नी उस पहाड़ की क़सम जिस पर अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को शरफ़े कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया। **3 :** इस नविश्ते से मुराद या तौरैत है या क़ुरआन या लौहे महफ़ूज़ या आ'माल नवीस फ़िरिश्तों के दफ़्तर।

www.dawateislami.net

الْمَعْمُوْرِ ۙ﴿۴﴾ وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ۙ﴿۵﴾ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ۙ﴿۶﴾ اِنَّ عَذَابَ

मा'मूर[4] और बुलन्द छत[5] और सुलगाए हुए समुन्दर की[6] बेशक तेरे रब

رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۙ﴿۷﴾ مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۙ﴿۸﴾ يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ۙ﴿۹﴾ وَّ

का अ़ज़ाब ज़रूर होना है[7] उसे कोई टालने वाला नहीं जिस दिन आस्मान हिलना सा हिलना हिलेंगे[8] और

تَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ؕ﴿۱۰﴾ فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۙ﴿۱۱﴾ الَّذِيْنَ هُمْ

पहाड़ चलना सा चलना चलेंगे[9] तो उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी है[10] वोह जो

وقف لازم

فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ۘ﴿۱۲﴾ يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ؕ﴿۱۳﴾ هٰذِهِ

मश्ग़ले में[11] खेल रहे हैं जिस दिन जहन्नम की त़रफ़ धक्का दे कर धकेले जाएंगे[12] येह

النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ۘ﴿۱۴﴾ اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا

है वोह आग जिसे तुम झुटलाते थे[13] तो क्या येह जादू है या तुम्हें

تُبْصِرُوْنَ ۚ﴿۱۵﴾ اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّمَا

सूझता नहीं[14] इस में जाओ अब चाहे सब्र करो या न करो सब तुम पर एक सा है[15]

تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۘ﴿۱۶﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ۙ﴿۱۷﴾

तुम्हें उसी का बदला जो तुम करते थे[16] बेशक परहेज़ गार बाग़ों और चैन में हैं

فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۘ﴿۱۸﴾ كُلُوْا وَ

अपने रब की देन पर शाद शाद[17] और उन्हें उन के रब ने आग के अ़ज़ाब से बचा लिया[18] खाओ और

4 : बैतुल मा'मूर सातवें आस्मान में अ़र्श के सामने का'बा शरीफ़ के बिल्कुल मुक़ाबिल है, येह आस्मान वालों का क़िब्ला है, हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते इस में त़वाफ़ व नमाज़ के लिये हाज़िर होते हैं फिर कभी उन्हें लौटने का मौक़अ़ नहीं मिलता, हर रोज़ नए सत्तर हज़ार हाज़िर होते हैं। ह़दीसे मे'राज में ब सिह़्ह़त साबित हुवा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सातवें आस्मान में बैतुल मा'मूर को मुलाह़ज़ा फ़रमाया। 5 : इस से मुराद आस्मान है जो ज़मीन के लिये ब मन्ज़िला छत के है या अ़र्श जो जन्नत की छत है। (قرطبی عن ابن عباس) 6 : मरवी है कि अल्लाह तआ़ला रोज़े क़ियामत तमाम समुन्दरों को आग कर देगा जिस से जहन्नम की आग में और भी ज़ियादती हो जाएगी। (خازن) 7 : जिस का कुफ़्फ़ार को वा'दा दिया गया है 8 : चक्की की त़रह़ घूमेंगे और इस त़रह़ ह़रकत में आएंगे कि उन के अज्ज़ा मुख़्तलिफ़ व मुन्तशिर हो जाएं। 9 : जैसे कि ग़ुबार हवा में उड़ता है, येह दिन क़ियामत का दिन होगा। 10 : जो रसूलों को झुटलाते थे। 11 : कुफ़्र व बात़िल के 12 : और जहन्नम के ख़ाज़िन काफ़िरों के हाथ गरदनों से और पाउं पेशानियों से मिला कर बांधेंगे और उन्हें मुंह के बल जहन्नम में धकेल देंगे और उन से कहा जाएगा 13 : दुन्या में 14 : येह उन से इस लिये कहा जाएगा कि वोह दुन्या में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ सेह्र की निस्बत करते थे और कहते थे कि हमारी नज़र बन्दी कर दी है। 15 : न कहीं भाग सकते हो न अ़ज़ाब से बच सकते हो और येह अ़ज़ाब 16 : दुन्या में कुफ़्र व तक्ज़ीब 17 : उस के अ़त़ा व ने'मत व ख़ैरो करामत पर। 18 : और उन से कहा जाएगा।

www.dawateislami.net

اشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔۢا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ وَ

पियो ख़ुश गवारी से सिला अपने आ'माल का[19] तख़्तों पर तक्या लगाए जो क़िता़र लगा कर बिछे हैं और

زَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ

हम ने उन्हें बियाह दिया बड़ी आंखों वाली हूरों से और जो ईमान लाए और उन की औलाद ने ईमान के साथ उन की पैरवी की

اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ كُلُّ امْرِئٍۢ

हम ने उन की औलाद उन से मिला दी[20] और उन के अ़मल में उन्हें कुछ कमी न दी[21] सब आदमी अपने

بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿٢١﴾ وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢٢﴾

किये में गिरिफ़्तार हैं[22] और हम ने उन की मदद फ़रमाई मेवे और गोश्त से जो चाहें[23]

يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ

एक दूसरे से लेते हैं वोह जाम जिस में न बेहूदगी और न गुनहगारी[24] और उन के ख़िदमत गार

غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٢٤﴾ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ

लड़के उन के गिर्द फिरेंगे[25] गोया वोह मोती हैं छुपा कर रखे गए[26] और उन में एक ने दूसरे की त़रफ़ मुंह

يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ فَمَنَّ اللّٰهُ

किया पूछते हुए[27] बोले बेशक हम इस से पहले अपने घरों में सहमे हुए थे[28] तो अल्लाह ने हम पर

عَلَيْنَا وَوَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ

एह़सान किया[29] और हमें लू के अ़ज़ाब से बचा लिया[30] बेशक हम ने अपनी पहली ज़िन्दगी में[31] उस की इ़बादत की थी बेशक वोही

19 : जो तुम ने दुन्या में किये कि ईमान लाए और ख़ुदा और रसूल की ता़अ़त इख़्तियार की। **20 :** जन्नत में, अगर्चे बाप दादा के दरजे बुलन्द हों तो भी उन की ख़ुशी के लिये उन की औलाद उन के साथ मिला दी जाएगी और अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्लो करम से उस औलाद को भी वोह दरजे अ़त़ा फ़रमाएगा। **21 :** उन्हें उन के आ'माल का पूरा सवाब दिया और औलाद के दरजे अपने फ़ज़्लो करम से बुलन्द किये। **22 :** या'नी हर काफ़िर अपने कुफ़्री अ़मल में दोज़ख़ के अन्दर गिरिफ़्तार है। (خازن) **23 :** या'नी अहले जन्नत को हम ने अपने एह़सान से दम ब दम मज़ीद ने'मतें अ़त़ा फ़रमाईं। **24 :** जैसा कि दुन्या की शराब में क़िस्म क़िस्म के मफ़ासिद थे क्यूं कि शराबे जन्नत के पीने से न अ़क़्ल ज़ाइल होती है न ख़स्लतें ख़राब होती हैं न पीने वाला बेहूदा बकता है न गुनहगार होता है। **25 :** ख़िदमत के लिये और उन के ह़ुस्न व सफ़ा व पाकीज़गी का येह आ़लम है **26 :** जिन्हें कोई हाथ ही न लगा। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया कि किसी जन्नती के पास ख़िदमत में दौड़ने वाले ग़ुलाम हज़ार से कम न होंगे और हर ग़ुलाम जुदा जुदा ख़िदमत पर मुक़र्रर होगा। **27 :** या'नी जन्नती जन्नत में एक दूसरे से दरयाफ़्त करेंगे कि दुन्या में किस ह़ाल में थे और क्या अ़मल करते थे और येह दरयाफ़्त करना ने'मते इलाही के ए'तिराफ़ के लिये होगा। **28 :** अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से और इस अन्देशे से कि नफ़्सो शैत़ान ख़लले ईमान का बाइ़स न हों और नेकियों के रोके जाने और बदियों पर गिरिफ़्त किये जाने का भी अन्देशा था। **29 :** रह़मत और मग़्फ़िरत फ़रमा कर। **30 :** या'नी आतशे जहन्नम के अ़ज़ाब से जो जिस्मों में दाख़िल होने की वज्ह से समूम या'नी लू के नाम से मौसूम की गई। **31 :** या'नी दुन्या में इख़्लास के साथ सिर्फ़।

www.dawateislami.net

الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ﴿٢٨﴾ فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ ﴿٢٩﴾

एहसान फ़रमाने वाला मेहरबान है तो ऐ महबूब तुम नसीहत फ़रमाओ[32] कि तुम अपने रब के फ़ज़्ल से न काहिन हो न मज्नून

اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ﴿٣٠﴾ قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ

या कहते हैं[33] येह शाइर हैं हमें इन पर हवादिसे ज़माना का इन्तिज़ार है[34] तुम फ़रमाओ इन्तिज़ार किये जाओ[35]

مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ﴿٣١﴾ اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ

मैं भी तुम्हारे इन्तिज़ार में हूं[36] क्या उन की अक़्लें उन्हें येही बताती हैं[37] या वोह सरकश

طَاغُوْنَ ﴿٣٢﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾ فَلْيَاْتُوْا

लोग हैं[38] या कहते हैं उन्हों ने[39] येह क़ुरआन बना लिया बल्कि वोह ईमान नहीं रखते[40] तो इस जैसी

بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ

एक बात तो ले आएं[41] अगर सच्चे हैं क्या वोह किसी अस्ल से न बनाए गए[42] या

هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ﴿٣٦﴾

वोही बनाने वाले हैं[43] या आस्मान और ज़मीन उन्हों ने पैदा किये[44] बल्कि उन्हें यक़ीन नहीं[45]

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ

या उन के पास तुम्हारे रब के ख़ज़ाने हैं[46] या वोह कड़ोड़े (हाकिमे आ'ला) हैं[47] या उन के पास कोई ज़ीना है[48]

32 : कुफ़्फ़ारे मक्का को और उन के काहिन और मज्नूं कहने की वज्ह से आप नसीहत से बाज़ न रहें, इस लिये **33 :** येह कुफ़्फ़ारे मक्का आप की शान में **34 :** कि जैसे इन से पहले शाइर मर गए और उन के जथ्थे टूट गए येही हाल इन का होना है (مَعَاذَاللّٰه) और वोह कुफ़्फ़ार येह भी कहते थे कि इन के वालिद की मौत जवानी में हुई है इन की भी ऐसी ही होगी **अल्लाह** तआ़ला अपने हबीब से फ़रमाता है **35 :** मेरी मौत का **36 :** कि तुम पर अ़ज़ाबे इलाही आए, चुनान्चे येह हुवा और वोह कुफ़्फ़ार बद्र में क़त्ल व क़ैद के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किये गए। **37 :** जो वोह हुज़ूर की शान में कहते हैं शाइर, साहिर, काहिन, मज्नून। ऐसा कहना बिल्कुल ख़िलाफ़े अ़क़्ल है और तुर्रा येह कि मज्नून भी कहते जाएं और शाइर, साहिर, काहिन भी और फिर अपने आ़क़िल होने का दा'वा **38 :** कि इ़नाद में अन्धे हो रहे हैं और कुफ़्रो तुग़यान में ह़द से गुज़र गए। **39 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपने दिल से **40 :** और दुश्मनी व ख़ुब्से नफ़्स से ऐसे त़ा'न करते हैं **अल्लाह** तआ़ला उन पर हुज्जत क़ाइम फ़रमाता है कि अगर उन के ख़याल में क़ुरआन जैसा कलाम कोई इन्सान बना सकता है **41 :** जो हुस्नो ख़ूबी और फ़साह़तो बलाग़त में इस के मिस्ल हो **42 :** या'नी क्या वोह मां बाप से पैदा न हुए, जमादे बे अ़क़्ल हैं जिन पर हुज्जत क़ाइम न की जाएगी ? ऐसा नहीं या येह मा'ना हैं कि क्या वोह नुत्फ़े से पैदा नहीं हुए और क्या उन्हें ख़ुदा ने नहीं बनाया ? **43 :** कि उन्हों ने अपने आप को ख़ुद ही बना लिया हो, येह भी मुह़ाल है तो ला मुह़ाला उन्हें इक़्रार करना पड़ेगा कि उन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने पैदा किया, फिर क्या सबब है कि वोह उस की इ़बादत नहीं करते और बुतों को पूजते हैं। **44 :** येह भी नहीं और **अल्लाह** तआ़ला के सिवा आस्मान व ज़मीन पैदा करने की कोई क़ुदरत नहीं रखता तो क्यूं उस की इ़बादत नहीं करते। **45 :** **अल्लाह** तआ़ला की तौह़ीद और उस की क़ुदरत व ख़ालिक़िय्यत का, अगर इस का यक़ीन होता तो ज़रूर उस के नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाते। **46 :** नुबुव्वत और रिज़्क़ वग़ैरा के, कि उन्हें इख़्तियार हो जहां चाहें ख़र्च करें और जिसे चाहें दें। **47 :** ख़ुद मुख़्तार जो चाहें करें कोई पूछने वाला न हो। **48 :** आस्मान की त़रफ़ लगा हुवा।

www.dawateislami.net

يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ

जिस में चढ़ कर सुन लेते हैं[49] तो उन का सुनने वाला कोई रोशन सनद लाए क्या उस को बेटियां

وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ اَمْ

और तुम को बेटे[50] या तुम उन से[51] कुछ उजरत मांगते हो तो वोह चट्टी (तावान) के बोझ में दबे हैं[52] या

عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤١﴾ اَمْ يُرِيْدُوْنَ كَيْدًا ؕ فَالَّذِيْنَ

उन के पास ग़ैब हैं जिस से वोह हुक्म लगाते हैं[53] या किसी दाउं (फ़रेब) के इरादे में हैं[54] तो

كَفَرُوْا هُمُ الْمَكِيْدُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمْ لَهُمْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا

काफ़िरों ही पर दाउं (फ़रेब) पड़ना है[55] या अल्लाह के सिवा उन का कोई और ख़ुदा है[56] अल्लाह को पाकी उन के

يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٣﴾ وَاِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ

शिर्क से और अगर आस्मान से कोई टुकड़ा गिरता देखें तो कहेंगे तह ब तह

مَّرْكُوْمٌ ﴿٤٤﴾ فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ يُصْعَقُوْنَ ﴿٤٥﴾

बादल है[57] तो तुम उन्हें छोड़ दो यहां तक कि वोह अपने उस दिन से मिलें जिस में बेहोश होंगे[58]

يَوْمَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٦﴾ ؕ وَاِنَّ لِلَّذِيْنَ

जिस दिन उन का दाउं (फ़रेब) कुछ काम न देगा और न उन की मदद हो[59] और बेशक

ظَلَمُوْا عَذَابًا دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ

ज़ालिमों के लिये उस से पहले एक अ़ज़ाब है[60] मगर उन में अक्सर को ख़बर नहीं[61] और ऐ महबूब तुम अपने रब के

49 : और उन्हें मा'लूम हो जाता है कि कौन पहले हलाक होगा और किस की फ़त्ह होगी अगर उन्हें इस का दा'वा हो **50 :** येह उन की सफ़ाहत और बे वुक़ूफ़ी का बयान है कि अपने लिये तो बेटे पसन्द करते हैं और अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ बेटियों की निस्बत करते हैं जिन को बुरा जानते हैं। **51 :** दीन की ता'लीम पर **52 :** और तावान की ज़ेरबारी के बाइ़स इस्लाम नहीं लाते, येह भी तो नहीं है फिर इस्लाम लाने में उन्हें क्या उ़ज़्र है ? **53 :** कि मरने के बा'द न उठेंगे और उठे भी तो अ़ज़ाब न किये जाएंगे, येह बात भी नहीं। **54 :** दारुन्नदवा में जम्अ़ हो कर अल्लाह तआ़ला के नबी हादिये बरह़क़ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़रर व क़त्ल के मश्वरे करते हैं **55 :** उन के मक्रो कैद का वबाल उन्हीं पर पड़ेगा चुनान्चे ऐसा ही हुवा अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को उन के मक्र से महफ़ूज़ रखा और उन्हें बद्र में हलाक किया। **56 :** जो उन्हें रोज़ी दे और अ़ज़ाबे इलाही से बचा सके। **57 :** येह जवाब है कुफ़्फ़ार के उस मक़ूले का जो कहते थे कि हम पर आस्मान का कोई टुकड़ा गिरा कर अ़ज़ाब कीजिये अल्लाह तआ़ला इसी के जवाब में फ़रमाता है कि इन का कुफ़्रो इ़नाद इस ह़द पर पहुंच गया है कि अगर इन पर ऐसा ही किया जाए कि आस्मान का कोई टुकड़ा गिरा दिया जाए और आस्मान से इसे गिरते हुए देखें तो भी कुफ़्र से बाज़ न आएं और बराहे इ़नाद (दुश्मनी की वज्ह) येही कहें कि येह तो अब्र है इस से हम सैराब होंगे। **58 :** मुराद इस से नफ़्ख़ए ऊला का दिन है। **59 :** ग़रज़ किसी त़रह़ अ़ज़ाबे आख़िरत से बच न सकेंगे। **60 :** उन के कुफ़्र के सबब अ़ज़ाबे आख़िरत से पहले और वोह अ़ज़ाब या तो बद्र में क़त्ल होना है या भूक व क़ह़त़ की हफ़्त सालह मुसीबत या अ़ज़ाबे क़ब्र **61 :** कि वोह अ़ज़ाब में मुब्तला होने वाले हैं।

www.dawateislami.net

رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿۴۸﴾ وَمِنَ

हुक्म पर ठहरे रहो[62] कि बेशक तुम हमारी निगहदाश्त में हो[63] और अपने रब की ता'रीफ़ करते हुए उस की पाकी बोलो जब तुम खड़े हो[64] और कुछ

الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ﴿۴۹﴾ ع ۲

रात में उस की पाकी बोलो और तारों के पीठ देते[65]

اٰیاتها ٦٢ | ٥٣ سُوْرَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ ٢٣ | رکوعاتها ٣

सूरए नज्म मक्किय्या है, इस में बासठ आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ﴿۱﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ﴿۲﴾ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ

इस प्यारे चमक्ते तारे मुहम्मद की क़सम जब येह मे'राज से उतरे[2] तुम्हारे साहिब न बहके न बे राह चले[3] और वोह कोई बात अपनी ख़्वाहिश से

الْهَوٰى ﴿۳﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ﴿۴﴾ عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ﴿۵﴾

नहीं करते वोह तो नहीं मगर वह्य जो उन्हें की जाती है[4] उन्हें[5] सिखाया[6] सख़्त क़ुव्वतों वाले ताक़त वर ने[7]

62 : और जो मोहलत उन्हें दी गई है इस पर दिलतंग न हो **63 :** तुम्हें वोह कुछ ज़रर नहीं पहुंचा सकते। **64 :** नमाज़ के लिये इस से तक्बीरे ऊला के बा'द "سُبْحَانَکَ اللّٰهُمَّ" पढ़ना मुराद है या येह मा'ना हैं कि जब सो कर उठो तो अल्लाह तआ़ला की हम्द व तस्बीह़ किया करो या येह मा'ना हैं कि हर मजलिस से उठते वक़्त हम्द व तस्बीह़ बजा लाया करो। **65 :** या'नी तारों के छुपने के बा'द, मुराद येह है कि इन अवक़ात में अल्लाह तआ़ला की तस्बीह़ व तह़मीद करो, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि तस्बीह़ से मुराद नमाज़ है। **1 :** सूरतुन्नज्म मक्किय्या है, इस में तीन 3 रुकूअ़, बासठ 62 आयतें, तीन सो साठ 360 कलिमे, एक हज़ार चार सो पांच 1405 हर्फ़ हैं, येह वोह पहली सूरत है जिस का रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ए'लान फ़रमाया और ह़रम शरीफ़ में मुश्रिकीन के रू बरू पढ़ी। **2 :** नज्म की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन के बहुत से क़ौल हैं बा'ज़ ने सुरय्या मुराद लिया है अगर्चे सुरय्या कई तारे हैं लेकिन नज्म का इत्लाक़ इन पर अ़रब की आ़दत है, बा'ज़ ने नज्म से जिन्से नुजूम मुराद ली है, बा'ज़ ने वोह नबातात जो साक़ नहीं रखते ज़मीन पर फैलते हैं, बा'ज़ ने नज्म से क़ुरआन मुराद लिया है लेकिन सब से लज़ीज़ तफ़्सीर वोह है जो ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने इख़्तियार फ़रमाई कि नज्म से मुराद है ज़ाते गिरामी हादिये बरह़क़ सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की। (خازن) **3 :** صَاحِبُكُمْ से मुराद सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं, मा'ना येह हैं कि हुज़ूरे अन्वर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कभी त़रीक़े ह़क़ व हिदायत से उ़दूल न किया हमेशा अपने रब की तौह़ीद व इ़बादत में रहे, आप के दामने इ़स्मत पर कभी किसी अम्रे मक्रूह की गर्द न आई और बे राह न चलने से येह मुराद है कि हुज़ूर हमेशा रुश्दो हिदायत की आ'ला मन्ज़िल पर मुतमक्किन रहे, ए'तिक़ादे फ़ासिद का शाएबा भी कभी आप के ह़ाशियए बिसात़ तक न पहुंच सका। **4 :** येह जुम्लए ऊला की दलील है कि हुज़ूर का बहक्ना और बे राह चलना मुम्किन व मुतसव्वर ही नहीं क्यूं कि आप अपनी ख़्वाहिश से कोई बात फ़रमाते ही नहीं जो फ़रमाते हैं वह्ये इलाही होती है और इस में हुज़ूर के ख़ुल्क़े अ़ज़ीम और आप की आ'ला मन्ज़िलत का बयान है, नफ़्स का सब से आ'ला मर्तबा येह है कि वोह अपनी ख़्वाहिश तर्क कर दे। (کبیر) और इस में येह भी इशारा है कि नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अल्लाह तआ़ला के ज़ात व सिफ़ात व अफ़्आ़ल में फ़ना के उस आ'ला मक़ाम पर पहुंचे कि अपना कुछ बाक़ी न रहा तजल्लिये रब्बानी का येह इस्तीलाए ताम हुवा कि जो कुछ फ़रमाते हैं वोह वह्ये इलाही होती है। (روح البیان) **5 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को **6 :** जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने उन की त़रफ़ वह्य फ़रमाया और इस ता'लीम से मुराद क़ल्बे मुबारक तक पहुंचा देना है। **7 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन इस त़रफ़ गए हैं कि सख़्त क़ुव्वतों वाले ताक़त वर से मुराद ह़ज़रते जिब्रील हैं और सिखाने से मुराद ब ता'लीमे इलाही सिखाना या'नी वह्ये इलाही का पहुंचाना है। ह़ज़रते ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि "شَدِيْدُ الْقُوٰى ذُوْمِرَّةٍ" से मुराद अल्लाह तआ़ला है उस ने अपनी ज़ात को इस वस्फ़ के साथ ज़िक्र फ़रमाया, मा'ना येह हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अल्लाह तआ़ला ने बे वासित़ा ता'लीम फ़रमाई। (تفسیر روح البیان)

www.dawateislami.net